कक्षा – आठ
पाठ - 3
बस की यात्रा
भाग – एक

द्वारा – श्रीमती अंजना माझी
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय -6 (मुंबई)

लेखक – परिचय

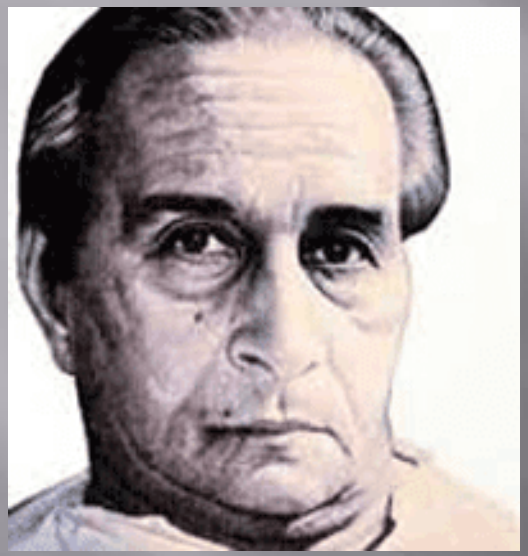

लेखक हरिशंकर परसाई का ज़न्म 22 अगस्त 1924 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के निकट जमानी नामक गाँव में हुआ था | इनकी प्राम्भिक शिक्षा से लेकर स्नातक तक की शिक्षा मध्य प्रदेश में ही हुई | इसके पश्चात नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए हिंदी साहित्य की परीक्षा उत्तीर्ण की | कुछ वर्षों तक इन्होने अध्यापन का कार्य भी किया | इन्होने 'वसुधा' नामक पत्रिका का संपादन और प्रकाशन किया | इनकी मृत्यु 10 अगस्त 1995 में हुई |

यह मुख्यत: सफल व्यंग्यकार माने जाते हैं | इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं हँसते हैं रोते हैं , जैसे उनके दिन फिरे , (कहानी संग्रह), रानी नागफनी की कहानी की तट की खोज (उपन्यास) , भूत केपाँव पीछे , मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाये आदि (निबंध संग्रह)

3 बस की यात्रा

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा—"यह बस चलती भी है?" वह बोले—"चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।" हमने कहा—"वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?"

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।

हम आगा-पीछा करने लगे। डॉक्टर मित्र ने कहा—"डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं—"आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा—राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

कक्षा – आठ
पाठ – तीन , बस की यात्रा
भाग – 2

द्वारा – अंजना माझी
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय – 6 (मुंबई)

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे—"बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती—"निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।"

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत जोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते—"वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।"

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

—हरिशंकर परसाई

कक्षा – आठ
बस की यात्रा
भाग तीन
अभ्यास – प्रश्नोत्तर एवं भाषा की बात

द्वारा – अंजना माझी
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय – 6 (मुंबई)

शब्दार्थ

1. वयोवृद्ध = बहुत बूढ़ा / बूढी
2. अनुभव = तजुर्बा
3. श्रद्धा = आदर भाव
4. सदियों से = युगों से
5. हिस्सेदार = भागीदार
6. नवेली = नई
7. विश्वसनीय = विश्वास करने योग्य
8. रंक = भिखारी
9. फकीर = साधू
10. कूच करना = आगे बढ़ना
11. निमित्त = कारण , उद्देश्य
12. असहयोग = साथ न देना
13. सविनय = विनय पूर्वक
14. अवज्ञा = न मानना
15. दौर = युग
16. बाडी =ढाँचा
17. इत्तेफाक =संयोग
18. क्षीण = कमजोर
19. ग्लानि = स्वयं पर शर्म महसूस करना
20. अंत्येष्टि = अंतिम क्रिया कर्म
21. बियाबान = सुनसान
22. उत्सर्ग = त्याग
23. दुर्लभ = कठिनता से प्राप्त होने वाला
24. प्रयाण = जाना
25. इत्मीनान = निश्चित

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न – 1 "मैंने उस कम्पनी के हिस्सेदार की तरफ पहलीबार श्रद्धाभाव से देखा |" लेखक के मन हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई ?

उत्तर – लेखक के मन में कम्पनी के भागीदार के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई क्योंकि वह बिलकुल खटारा बस को चलाने का साहस जुटा रहा था | यही नहीं वह अपनी पुरानी खटारा बस की खूब तारीफ कर रहा था और पुराने घिसे हुये टायर बस मे लगाकर यात्रियों की जान खतरे में डाल रहा है |

प्रश्न -2 . "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते |" लोगों ने यह सलाह क्यों दी ?

उत्तर – लोगो ने इस शाम वाली बस से न जाने की सलाह इसलिए दी क्योंकि बस की हालत बहुत खराब थी | बस कहीं भी दुर्घटनाग्रस्त हो सकती थी | बस इतनी पुरानी थी कि कहीं भी , कभी भी रुक सकती थी इस प्रकार की बस मे जाने से अपने गंतव्य तक पहुँचना मुश्किल होता है |

प्रश्न – 3 . "ऐसा लगा कि जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं |" – लेखक को ऐसा क्यों लगा ?

उत्तर – जब बस का इंजन स्टार्ट हुआ तो पूरी बस बुरी तरह हिलने लगी | बस स्टार्ट होने से कंपन इंजन में होना चाहिए पर यहाँ पर तो पूरी बस हिल रही थी | खिड़कियाँ के काँच हिल कर ज़ोर से आवाज कर रहे थे | पूरी बस इतना आवाज कर रही थी और इतना ज्यादा हिल रही थी कि लेखक को लगा कि पूरी बस ही इंजन है |

प्रश्न -4. “गज़ब हो गया | ऐसी बस अपने आप चलती है |” लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई ?

उत्तर – बस की हालत इतनी ज्यादा खराब थी कि देखकर नहीं लगता था कि बस चलती भी है | और उसके बाद कम्पनी के हिस्सेदार का यह कहना कि हां चलती है | बस की जर्जर अवस्था को देखकर लेखक विश्वास नहीं कर पा रहा था , इसलिए वह हैरान था |

प्रश्न-5. “ मै हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था |” – लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था ?

उत्तर – लेखक हर पेड़ को दुशमन समझ रहा था क्योंकि उसे हर पेड़ से डर लग रहा था | बस की हालत इतनी बुरी थी कि उसके ब्रेक कभी भी फेल हो सकते थे और बस अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा सकती थी |

<u>पाठ से आगे</u>

प्रश्न-1.’सविनय अवज्ञा आंदोलन’ किसके नेतृत्व में किस उद्देश्य से कब हुआ था ? इतिहास की पुस्तकों के आधार पर लिखिए |

उत्तर – सविनय अवज्ञा आंदोलन सन 1930 मे गांधीजी के नेतृत्व मे अंग्रेजी सरकार के आदेशों का पालन न करने के लिए किया गया था |अंग्रेजी सरकार के साथ असहयोग करने के लिए किया गया था | 12 मार्च 1930 को इसी कड़ी मे दांडी मार्च भी किया गया अंगेजों द्वारा नमक पर टैक्स (कर) लगाने के विरोध मे किया गया था |

प्रश्न-2. सविनय अवज्ञा आंदोलन का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप किया है ? लिखिए |

उत्तर – सविनय अवज्ञा आंदोलन का अर्थ है विनय पूर्वक आदेश को न मानना तथा असहयोग का का अर्थ है सहयोग न करना | बस की हाल्ट इतनी बुरी थी कि बस का एक –एक पुर्जा अपने हिसाब से चल रहा था वह चालक (ड्राइवर) की बात नहीं मान रहा था | अगर ड्राइवर दाएँ मुड़ना चाहता तो बस बाईं ओर जाना चाहती थी बड़ी कठिनाई से बस चल रही थी | दूसरा आंदोलन यदि असहयोग की बात करें तो बस का कोई भी पुर्जा किसी के साथ सहयोग नहीं कर रहा था | कभी सीट आगे भाग रही थी तो कभी पीछे | बस की सभी कल-पुर्जे एक दूसरे से असहयोग कर रहे थे | इसलिए व्यंग्यकार ने इन दोनों आंदोलनो का उपयोग व्यंग्य के रूप मे किया है |

प्रश्न – 3. आप अपनी किसी यात्रा के खट्टे-मीठे अनुभवों को याद करते हुये लिखिए |

उत्तर – विद्यार्थी स्वयं करें |

<u>मन-बहलाना</u>

1. अनुमान कीजिये यदि बस जीवित प्राणी होती , बोल सकती तो वह अपनी बुरी हालत और भारी बोझ के कष्ट को किन शब्दों मे व्यक्त करती ? लिखिए |

उत्तर – विद्यार्थी स्वयं उत्तर लिखें |

भाषा की बात –

प्रश्न 1. बस, वश, बस तीन शब्द हैं – इनमें बस सवारी के अर्थ में , वश अधीनता के अर्थ में, और बस पर्याप्त (काफी) के अर्थ मे प्रयुक्त होता है, जैसे – बस से चलना होगा | मेरे वश मे नहीं है | अब बस करो |

उपर्युक्त वाक्यों के सामने वश और बास शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए |

(क) 1. प्रकृति को अपने वश में नहीं कर सकते |

2. जादूगर ने दर्शकों को अपने वश में कर लिया \

(ख) 1. मुझे कल सुबह की बस से जाना है |

2. बस अब और नहीं खा सकते |

(ग) 1. बस करो अब ज्यादा मत बोलो

2. बस और नहीं चला जाता |

प्रश्न 2. “हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें | पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है |”

ऊपर दिए गए वाक्यों में ने , की , से आदि वाक्य के दो शब्दों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर रहें हैं | ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं | इसी तरह दो वाक्यों को एक साथ जोड़ने के लिए ‘कि’ का प्रयोग होता है |

कहानी में से दोनों इस प्रकार के चार वाक्यों को चुनिए |

उत्तर – 1. कंपनी के हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे |

2. डॉक्टर मित्र ने कहा – 'डरो मत चलो'

3. चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे दयनीय लग रही है |

4. वृद्धा की आँखों की रोशनी जाने लगी |

'कि' योजक से –

1. हम लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते |

2 हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है |

3. मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद है |

4. कभी लगता कि सीट को छोड़कर बाडी आगे भागी जा रही है |

प्रश्न – 3. "हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए | चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी |"

दिए गए वाक्यों में आई 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं – जैसे – घूमना इत्यादि | उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए |

उत्तर – गति के लिए प्रयोग होने वाली कुछ क्रियाएँ उनके वाक्य –प्रयोग |

दौड़ना – फ़ौज में बहाल होने लिए उम्मीदवार को दौड़ना आवश्यक है |

टहलना – प्रात:काल टहलना स्वस्थ के रहने के लिए सर्वोत्तम साधन है \

चलना – बुढ़ापे के कारण बुढ़िया का चलना मुश्किल था |

प्रश्न – 4.”काँच बहुत कम बचे थे | जो बचे थे , उनसे हमें बचना था |”

इस वाक्य में ‘बच’ शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है | एक ‘शेष’ के अर्थ में और दूसरा ‘सुरक्षा’ के अर्थ में |

नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिये | ध्यान रहे, एक ही वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए |

उत्तर – (क) जल - जल के बिना यह पृथ्वी आग के सामान जल सकती है |

(ख) फल – फल खाने से अच्छे स्वास्थ्य का फल मिलता है |

(ग) हार – विरोधी टीम के मैच हार जाने के बाद जीतने वाली टीम को हार पहनाया गया |

प्रश्न -5. बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी शब्द ‘फर्स्ट क्लास’ में दो शब्द हैं –फर्स्ट और क्लास | यहाँ क्लास का विशेषण है फर्स्ट | चूंकि फर्स्ट संख्या है, फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है | ‘महान आदमी’ में किसी आदमी की विशेषता है महान | यह गुणवाचक विशेषण है | संख्यावाचक और गुणवाचक विशेषण के दो –दो उदाहरण खोजकर लिखिए|

उत्तर – गुणवाचक विशेषण – समझदार , वृद्धावस्था , अनुभवी , सच्चा आदमी , आदि

संख्यावाचक विशेषण – पाँच मित्रों , आठ-दस मील , फर्स्ट क्लास , दूसरा टायर ||

समाप्त

धन्यवाद